

जल और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति: एक विश्लेषण

डॉ० विजय कुमार वर्मा

डॉ० शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

जल मानव आजीविका का एक अनिवार्य पहलू है। यह लघु अवधि और लंबी अवधि की प्रक्रिया के लिए किसी देश की आर्थिक विकास रणनीति का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। आर्थिक और पर्यावरणीय सुरक्षा एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र या राष्ट्र राज्यों के अंदर भू-राजनीति और जल सुरक्षा के रणनीतिक हितों में परस्पर जुड़े हुए कारक है। खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा और आर्थिक सुरक्षा महत्वपूर्ण पहलू हैं जो जल सुरक्षा पर निर्धारित होते हैं। इसलिए, हर देश की बहुउद्देशीय विकासात्मक रणनीति में मीठे जल के संसाधन जैसे नदी एक मुख्य मूल्य रही हैं। लेकिन, सिंचाई और कृषि खेती की भारी मांग, शहरीकरण और औद्योगीकरण, जनसंख्या वृद्धि और जलवायु परिवर्तन चुनौतीपूर्ण कारक बन गए हैं। परिणामतः, समकालीन विश्व में जल सुरक्षा एक उभरता हुआ वैश्विक मुद्दा बन गया है। यह मीठे जल की कमी और बढ़ते पर्यावरणीय तनाव के कारण है जो नदी तट वाले राज्यों के बीच संघर्ष पैदा कर सकता है। मीठे जल की मात्रा और गुणवत्ता को कम करने से तटीय राज्यों के बीच जल से संबंधित संभावित संघर्ष पैदा होता है। उदाहरण के लिए मध्य पूर्व, दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और उत्तरी अफ्रीका जैसे विभिन्न उपमहाद्वीपों में जल से संबंधित कई संघर्ष सामने आए हैं।

खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा और आर्थिक सुरक्षा रणनीति की चुनौतियों के प्रति व कृषि उद्देश्यों के लिए मीठा जल भारत के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। उन चुनौतियों का प्रबंधन करते हुए, भारत सिंधु नदी, गंगा नदी, ब्रह्मपुत्र नदी और अन्य सहायक नदियों पर कई बहुउद्देशीय बांध संबंधी परियोजनाओं को लागू कर रहा है। लेकिन बांधों के माध्यम से अतिदोहन और ऊपरी तटवर्ती राज्यों द्वारा सिंचाई परियोजनाओं की समस्या भारत की जल सुरक्षा के लिए एक प्रमुख चुनौती बन गई है। दक्षिण एशिया के मामले में, ट्रांसबाउंड्री रिवर कोर्स, रिपेरियन राज्यों के बीच एक बड़ी राजनीतिक विवाद का विषय रहा है। बांग्लादेश और पाकिस्तान के एक ऊपरी तटवर्ती राज्य के रूप में भारत बड़े आलोचकों के अधीन रहा है क्योंकि क्रमशः गंगा, ब्रह्मपुत्र, बराक और सिंधु नदी बेसिन पर कई बांध संबंधी परियोजनाएं बनाई गई हैं जो आजीविका, पर्यावरण और खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करती हैं। दूसरी ओर चीन, भारत और बांग्लादेश की सीमाओं के साथ बहने वाली ब्रह्मपुत्र नदी पर भारत का एक ऊपरी तटवर्ती राज्य है। इस मामले में, चीन को भारत की जल सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा माना जाता है क्योंकि चीन द्वारा बनाए गए बांधों के परिणामस्वरूप भारत में जल की कमी हो जाती है, निश्चित रूप से बांग्लादेश में भी। सीमा पार की नदियों पर उन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, जल भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति का एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। पारंपरिक सुरक्षा दुविधा से लेकर गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों तक, भारत में पड़ोसी देशों के साथ सीमा पार नदी के मुद्दों के प्रबंधन के लिए सक्रिय चेतना होनी चाहिए।

प्रस्तुत लेख पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देने के साथ भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा को संबोधित करता है। उन तटवर्ती राज्यों के साथ सीमा पार नदी जल बंटवारे से संबंधित उभरते हुए मुद्दे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौती बन गए हैं क्योंकि इन मुद्दों का भू-राजनीति और इसकी क्षेत्रीय अखंडता (पारंपरिक) को बनाए रखने के रणनीतिक

हित पर सीधा प्रभाव पड़ता है। ये मुद्दे सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा, खाद्य और स्वास्थ्य सुरक्षा (गैर-पारंपरिक) को संतुलित करने के कुछ पहलुओं से भी सीधे जुड़े हुए हैं।

शोध के उद्देश्य :

शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. भारत में जल सुरक्षा से संबंधित पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों का विश्लेषण करना।
2. भारत की सामाजिक-आर्थिक विकास रणनीति पर जल सुरक्षा के प्रभाव की जांच करना।
3. पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देते हुए भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा का मूल्यांकन करना।
4. अपने पड़ोस के साथ सीमा पार नदी जल के बंटवारे और भू-राजनीति और रणनीति पर इसके प्रभाव से संबंधित उभरते मुद्दों की जांच करना।
5. जल सुरक्षा की दिशा में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए सिफारिशें प्रस्तावित करना।

शोध पत्र का उद्देश्य भारत में जल सुरक्षा से संबंधित चुनौतियों और अवसरों की व्यापक समझ प्रदान करना है। इसे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति और सामाजिक-आर्थिक विकास पर जल सुरक्षा के प्रभाव की अंतर्दृष्टि भी प्रदान करना है। इसमें ऐसे सुझाव भी दिए गए हैं जो भारत को अपने पड़ोस के साथ सीमा पार नदी जल के बंटवारे से संबंधित उभरते मुद्दों का समाधान करने और अपनी जल सुरक्षा बढ़ाने में मदद कर सकें। शोध पद्धतिरु यह शोध पत्र गुणात्मक अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है क्योंकि अनुसंधान का उद्देश्य पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देने के साथ भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा का पता लगाना है। गणात्मक अनुसंधान डिजाइन विषय की गहन खोज व और मुद्दों की व्यापक समझ प्रदान करती है।

इस शोध के लिए डेटा संग्रह विधि साहित्य समीक्षा पर आधारित है। साहित्य समीक्षा में जल सुरक्षा के प्रति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति पर जानकारी इकट्ठा करने के लिए अकादमिक पत्रिकाओं, पुस्तकों और अन्य प्रासंगिक स्रोतों की व्यापक खोज सम्मिलित है। साहित्य समीक्षा में अपने पड़ोस के साथ सीमा पार नदी जल के बंटवारे और भू-राजनीति और रणनीति पर इसके प्रभाव से संबंधित उभरते मुद्दों का विश्लेषण भी सम्मिलित किया गया है।

शोध के उद्देश्य :

शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. भारत में जल सुरक्षा से संबंधित पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों का विश्लेषण करना।
2. भारत की सामाजिक-आर्थिक विकास रणनीति पर जल सुरक्षा के प्रभाव की जांच करना।
3. पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देते हुए भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा का मूल्यांकन करना।
4. अपने पड़ोस के साथ सीमा पार नदी जल के बंटवारे और भू-राजनीति और रणनीति पर इसके प्रभाव से संबंधित उभरते मुद्दों की जांच करना।
5. जल सुरक्षा की दिशा में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए सिफारिशें प्रस्तावित करना।

शोध पत्र का उद्देश्य भारत में जल सुरक्षा से संबंधित चुनौतियों और अवसरों की व्यापक समझ प्रदान करना है। इसे भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति और सामाजिक-आर्थिक विकास पर जल सुरक्षा के प्रभाव की अंतर्दृष्टि भी प्रदान करना है। इसमें ऐसे सुझाव भी दिए गए हैं जो भारत को अपने पड़ोस के साथ सीमा पार नदी जल के बंटवारे से संबंधित उभरते मुद्दों का समाधान करने और अपनी जल सुरक्षा बढ़ाने में मदद कर सकें। शोध पद्धतिरु यह शोध पत्र गुणात्मक अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है क्योंकि अनुसंधान का उद्देश्य पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देने के साथ भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा का पता लगाना है। गणात्मक अनुसंधान डिजाइन विषय की गहन खोज व और मुद्दों की व्यापक समझ प्रदान करती है।

इस शोध के लिए डेटा संग्रह विधि साहित्य समीक्षा पर आधारित है। साहित्य समीक्षा में जल सुरक्षा के प्रति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति पर जानकारी इकट्ठा करने के लिए अकादमिक पत्रिकाओं, पुस्तकों और अन्य प्रासंगिक स्रोतों की व्यापक खोज सम्मिलित है। साहित्य समीक्षा में अपने पड़ोस के साथ सीमा पार नदी जल के बंटवारे और भू-राजनीति और रणनीति पर इसके प्रभाव से संबंधित उभरते मुद्दों का विश्लेषण भी सम्मिलित किया गया है।

साहित्य समीक्षा

विलियम जे. कॉसग्रोव और डेनियल पी. लॉक्स द्वारा लिखित पुस्तक वाटर मैनेजमेंट करेंट एंड फ्यूचर चैलेंजेज एंड रिसर्च डायरेक्शन जल प्रबंधन में वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का व्यापक अवलोकन प्रदान करती है। एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करने के महत्व पर जोर देते हैं। वे जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, सिस्टम संचालन और सिस्टम प्रबंधन सहित जल प्रबंधन के सभी पहलुओं में अनुसंधान की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

अरुण विश्वनाथ द्वारा लिखित पुस्तक पैडलिंग अपस्ट्रीम: ट्रांसबाउंड्री वाटर पॉलिटिक्स इन साउथ एशिया दक्षिण एशिया में सीमा पार जल राजनीति से जुड़े जटिल और विवादास्पद मुद्दों का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है। यह पुस्तक जल राजनीति के क्षेत्र में एक बहुमूल्य योगदान है, जो भारत, चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच जटिल संबंधों की सूक्ष्म समझ प्रदान करती है। विश्वनाथ का गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु नदियों का गहन विश्लेषण इन देशों द्वारा अपने साझा जल संसाधनों के प्रबंधन में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

सेबेस्टियन बिबा द्वारा लिखित जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी चाइना में प्रकाशित लेख, अपनी सीमा पार नदियों के प्रबंधन के लिए चीन के दृष्टिकोण का एक विचारोत्तेजक विश्लेषण प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में जब्त सुरक्षा के बढ़ते महत्व को देखते हुए बिबा का शोध विशेष रूप से प्रासंगिक है। लेखक उन जटिल तंत्रों और प्रथाओं पर प्रकाश डालता है जिनके माध्यम से चीन अपने साझा जल संसाधनों पर शक्ति का प्रयोग करता है। इस लेख में विभिन्न नदी घाटियों में चीन के व्यवहार का तुलनात्मक विश्लेषण है।

डी. शाहीन अख्तर की पुस्तक इमर्जिंग चैलेंजेस टू

इंडस वाटर्स ट्रीटी भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु जल संधि के सामने आने वाली जटिल चुनौतियों पर प्रकाश डालती है। अख्तर का काम सिंधु बेसिन में जल बंटवारे के आसपास की उभरती गतिशीलता का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है, जो इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाले बढ़ते पानी की कमी और पारिस्थितिक खतरों पर प्रकाश डालता है। वह दोनों देशों के बीच पानी के मुद्दों के राजनीतिकरण पर जोर देते हैं, जो भारत द्वारा चिनाब और झेलम जैसी नदियों पर बड़े जलविद्युत

संयंत्रों के निर्माण से प्रेरित है, जिससे जल प्रवाह में हेरफेर और सीमा पार प्रभावों के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं।

एस. कोठारी का लेख हूज नेशनल द डिसप्लेस्ड एज

विक्टिम्स ऑफ डेवलपमेंट भारत में विकास परियोजनाओं के कारण होने वाले गंभीर मुद्दों पर प्रकाश डालता है। यह लेख भारत की स्वतंत्रता के बाद से विभिन्न विकास परियोजनाओं के कारण हुए विस्थापन के ऐतिहासिक चक्रों की पड़ताल करता है, और इन समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों और अन्यायों पर प्रकाश डालता है। इसके अलावा, कोठारी का काम मुआवजे की अपर्याप्तता, भूमि के बदले भूमि मुआवजे की अनुपस्थिति और विकास-प्रेरित विस्थापन से प्रभावित लोगों के लिए प्रभावी पुनर्वास और पुनर्वास नीतियों की कमी पर जोर देता है।

उनका तर्क है कि जहां जल विवाद देशों के बीच तनाय बढ़ाने की क्षमता रखते हैं, वहीं वे सहयोग और एकीकरण का अक्सर भी प्रस्तुत करते हैं। लेखकों का सुझाव है कि दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) जैसे क्षेत्रीय संस्थान जल के मुद्दों पर बातचीत और सहयोग को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

विश्लेषण

प्रस्तुत शोध के लिए डेटा विश्लेषण पद्धति एक विषयगत विश्लेषण पर आधारित है। विषयगत विश्लेषण में साहित्य समीक्षा से एकत्र किए गए डेल में विषयों और पैटर्न की पाचान करना सम्मिलित है। पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देने के साथ भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा की व्यापक समता विकसित करने के लिए विषयों और पैटर्न का उपयोग किया गया है। सीमाएँ इस शोध की सीमाओं में प्रासंगिक साहित्य की उपतन्त्रता और सोय का क्षेत्र सम्मिलित है। अनुसंधान केवल जल सुरक्षा के प्रति भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति को कवर करेगा और राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के अन्य पहलुओं को सम्मिलित नहीं करेगा। बुल मिलाकर, या शोध फरती पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सुरक्षा परिप्रेक्ष्य पर जोर देने के साथ भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लिए खतरे की धारणा की व्यापक सम्या प्रदान करेगी। भारत के जल सुरक्षा सामरिक हित: एक उभरती हुई शक्ति होने के नाते भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, सासय और आर्थिक सुरक्षा के रख-रखाव लिए जल जैसे विशाल संसाधन की आवश्यकता है। जल भारत का एक रणनीतिक पहलू बन गया है कि सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र, बराक और अन्य सहायक नदियों के पाठ्यक्रमों पर बहु-परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना इस बात का एक तथ्य उदाहरण है कि कैसे भारत अपनी विकासायक रणनीति के लिए ऊर्जा संसाधनों की खोज करने की योजना बनाता है। राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना के साथ, भारत छोटे, मध्यम और बड़े बांधों से मिलकर कई बांधों का निर्माण कर रहा है। कुछ मध्यम और बड़े बांध राष्ट्रीय विकासात्मक रणनीति के अंत भारत के प्रमुख हित बने रहे। फरक्का बैराज जैसे बांधित तिपाई मुख तीरता यांच और अन्य परियोजनाएं जल सुरक्षा की दिशा में भारत की रणनीति एक प्रमुख उरण बन गई है। निर्माण के लक्ष्य और उद्देश्य, जैसा कि भारत सरकार बोनना बना रही है, गुरु रूप से बाय ऊर्जा और समग्र रूप से आर्थिक विवाह पर केर देने के साथ स्थायी नत सुरक्षा को पूरा करना है। इसलिए जल सुरवा कसे बाथ, ऊनों और आर्थिक सुरक्षा विकास के मामले में भारत के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में देखा है। ब्रह्मपुत्र नदी पर बीन को छोड़कर एक ऊपरी तांरीय राज्य के रूप में भारत की स्थिति भारत के हितों को और अधिक प्रभावशाली बनाती है। लेकिन भारी संख्या में बांध निर्माणों ने नदी

तहत राज्यों के द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों में नाटकीय चुनौतियों का सामना किया है जो दक्षिण एशिया की समकालीन भू-राजनीति में मुद्दे बन गए हैं।

पारंपरिक सुरक्षा दुविधा और जल दक्षिण एशिया में सीमा पार नदी के मुद्दों का विश्लेषण भारत और उसके पड़ोसी देशों जैसे चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान और नेपाल के बीच गंगा ब्रह्मपुत्र-मेघना नदी जल सुरक्षा चुनौतियों की ओर जाता है। राष्ट्रीय रणनीति पर इन मुद्दों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है। जल सुरक्षा के लिए पारंपरिक सुरक्षा दुविधा उन उभरती हुई चुनौतियों को संबंधित करती है जो ट्रांस बाउण्ड्री नदी के बीच और तटवर्ती राज्यों के बीच होती है, जिनका प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष प्रभाव क्षेत्र और सैन्य सुरक्षा रणनीति के राज्य सुरक्षा रखरखाव पर पड़ता है। या खंड अत के बटवारे की कूटनीति, संघर्ष और विवादों के निम्नलिखित मामले पर जोर देने के साथ जल से संबंधित मुद्दों से उत्पन्न खतरे की धारणा की जांच करता है।

भारत और अन्य डाउनस्ट्रीम देश भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से सिंधुनदी के जल बटवारे को लेकर जल मुद्दा विवादित है। गंगा नदी विवाद से लेकर सिंधु नदी विवाद तक, दोनों देशों में जल बंटवारे को लेकर गंभीर राजनीतिक तनाव रहा है। 1947 चीनी देशों की स्वतंत्रता के बाद सिंधु नदी एक अंतर्राष्ट्रीय नदी बन गई थी। परिणामस्वरूप भारत पाकिस्तान का एक ऊपरी तटवर्ती राज्य बन गया है जहां सिंधु नदी प्रणाली के 06 जल प्रमुख स्रोत प्रमुख भारतीय क्षेत्र के साथ एकीकृत किए गए थे। विश्व बैंक ने इस मुद्दे की मध्यस्थता की और दोनों देशों के लिए संघर्ष समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्व बैंक की मध्यस्थता में दोनों देशों द्वारा 1960 में सिंधु नदी संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। बाद की बांध संबंधी परियोजनाएं तनाव को पुनर्जीवित करने में प्रमुख चुनौतियां रही हैं। उदाहरण के लिए, तुलबुल नौवहन परियोजना, बगलिहार बांध, किशन गंगा परियोजना, उरी-द्वितीय पावर प्रोजेक्ट और अन्य तनाव के स्रोत रहे हैं? सिंधु नदी प्रणाली पर जल के बंटवारे के स्थायी प्रबंधन और उपयोग के लिए भारत को पाकिस्तान से निपटना चाहिए। एक बड़ी सार्वजनिक विवाद के अधीन वर्तमान भारत-पाकिस्तान नहीं जल बंटवारे का मुद्दा पहले से ही रहा है, इसलिए इसका राजनीतिकरण राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक विचार-विमर्श में किया गया। इन दोनों देशों के बीच सिक्योरिटाइजेशन की प्रक्रिया पर पहले से ही विवाद रहा है। पाकिस्तान का दावा है कि भारत द्वारा निर्मित सिंधु नदी परियोजना से जल का अपेक्षित प्रवाह पुद्ध तर एक कारक है। पाकिस्तान में जल संकट बढ़ाया देने वाला मुख्य कारक है। विश्व आर्थिक मंच ने सूची में तीसरे स्थान पर आतंकवादी हमलों के बाद पाकिस्तान को जल संकट का सबसे बड़ा संकट बताया। भारत में विभत्ता और पाकिस्तान में लाहौर के लोग अपनी आजीविका के लिए जल संकट के कारण विरोध करते हैं। जल संकट के कारण सभी को पारिवाहन भारतीय बांधों के शिताफा है क्योंकि बांग, निर्माण क्षेत्र में जल को कम कर है। इसलिए, सिंधु नदी प्रणाली भारत और पाकिस्तान के बीच संभावित संघर्ष का स्रोत बन गई है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, जल सुरक्षा और इसकी चुनौतियाँ राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए उभरती हुई चुनौतियाँ बन गई हैं। क्योंकि राष्ट्रीय मूल्य जल द्वारा निर्धारित किए जा रहे हैं। सर्वांगीण विकासात्मक रणनीति में इसके महत्व और उपयोगिता के कारण जल एक सुरक्षा चुनौती है। क्योंकि आर्थिक विकास देश में इसके मीठे जल से निर्धारित होता है। जल सुरक्षा विशेष रूप से कमी या संकट को चुनौती देता है जो आर्थिक विकास और सैन्य क्षमता को प्रभावित करती है। शांति और संघर्ष अध्ययनों सहित समकालीन अंतर्राष्ट्रीय या सुरक्षा अध्ययनों में, जन सुरक्षा से संबंधित मुद्दे राष्ट्रीय सुरक्षा के प्राथमिकता वाले पहलू हैं क्योंकि हमें सैन्य सुरक्षा जैसे अन्य पहलुओं में तुलना करते हैं। लेकिन, समकालीन दुनिया

में इसे अधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। कि जल सुरक्षा चुनौतियां दक्षिण एशिया में तटवर्तीय राज्यों के बीच भू-राजनैतिक मुद्दे बन गये हैं ये मुद्दे चल रही सैन्य सुरक्षा चुनौतियों को प्रभावित कर सकते हैं।

संदर्भ-सूची

- 1- Cosgrove, William, J. and Daniel .P. Louks, (2015), Water management : Current and future challenges and research directions, water resources research, no. : 6
- 2- Vishwanath, A . (2018), Paddling upstream : Trans boundry Water politics in south asia.
- 3- Biba , S. (2014), Desecuritization in china's behaviour towards its transboundary rivers.
- 4- Akhtar, D. Shaheen, (2010) Emerging challenges to Indus Water Treaty, Regional Studies.
- 5- Kothari. S.,(1996) Whose Nation? The displaced as victims of development, EPW.